बुद्धवर्ष 2552, श्रावण पूर्णिमा, 16 अगस्त, 2008 वर्ष 38 अंक 2

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

बालसङ्गतचारी हि, दीघमद्धान सोचति।
दुक्खो बालेहि संवासो, अमित्तेनेव सब्बदा।
धीरो च सुखसंवासो, ञातीनंव समागमो॥

धम्मपद २०७, सुखवग्गो

मूढ़ (पुरुषों) के साथ संगत करने वाला दीर्घ काल तक शोकग्रस्त रहता है, मूढ़ों का सहवास शत्रु के समान सदा दुःखदायी होता है, बंधुओं के समागम की भांति ज्ञानियों का सहवास सुखदायी होता है।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

(अभी तक विपश्यना पत्रिका में "बुद्धचारिका" नाम से धारावाहिक लेख प्रकाशित हो रहे थे। इन लेखों और चित्रों की संख्या लगभग १५० है। ये चित्र 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' की आर्ट-गैलरी में सुशोभित होंगे। इन पर अनवरत काम चल रहा है परंतु अभी तक सभी चित्र बन नहीं पाये हैं। इसलिए निर्णय लिया गया कि जो चित्र बन कर धम्मगिरि की आर्ट-गैलरी में लग गये हैं, उनकी एक अलग पुस्तक प्रकाशित कर दी जाय, ताकि जो लोग धम्मगिरि देखने के लिए आते हैं उन्हें इन चित्रों की, यानी बुद्ध के जीवन संबंधी घटनाओं के संबंध में सही जानकारी मिल सके। इस प्रकार २७ आलेखों (घटनाओं) और ३१ चित्रों की एक पुस्तक **'बुद्धजीवन-चित्रावली'** *नाम से प्रकाशित कर दी गयी है। इसमें बायें पृष्ठ पर चित्र हैं और सामने दाहिने पृष्ठ पर आलेख हैं। इससे भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित उन घटनाओं को समझना आसान हो जाता है और उनके बारे में फैली गलतफहमी भी दूर होती है। चूंकि इस पुस्तक का नाम "बुद्धजीवन-चित्रावली" रखा गया है इसलिए इसके शेष लेख फिलहाल इसी नाम से प्रकाशित होंगे। जिन्होंने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है, उन्हें इन आलेखों से प्रेरणा मिलेगी और वे आधुनिक तकनीक से छपी इस अत्यंत सुंदर और प्रेरणास्पद पुस्तक 'बुद्धजीवन-चित्रावली' को देखने-पढ़ने की ओर उन्मुख होंगे। इसे केवल देख-पढ़ कर ही संतुष्ट न हो जायँ बल्कि विपश्यना का अभ्यास करके सद्धर्म से सही माने में लाभान्वित हों! सं.)*

पटाचारा

श्रावस्ती नगर का महाधनी श्रेष्ठि-परिवार। उसकी सात मंजिली विशाल अट्टालिका। इसमें केवल चार सदस्यों का छोटा-सा परिवार – सेठ, सेठानी, एक छोटा पुत्र और एक पुत्री। पुत्री किशोर अवस्था को पार कर मदमाते यौवन में पांव रख रही। माता-पिता के पास बच्चों की देखभाल के लिए जरा भी समय नहीं। युवा पुत्री घर के एक युवा नौकर की कुसंगत से भटक गयी। दोनों पाप के कीचड़ में दिनों-दिन धँसते गये। उसका विवाह कहीं और न हो जाय, इसके पूर्व दोनों थोड़ा-बहुत जो भी धन-आभूषण हाथ लगा, उसे बटोर कर घर से निकल भागे और नगर से दूर एक छोटे गांव में जा बसे।

साथ लाया हुआ धन बहुत दिन काम न आ सका। अत्यंत विपन्न अवस्था में दिन बीतने लगे। दो वर्ष बाद युवती को गर्भ रह गया। जैसे-जैसे गर्भ बढ़ने लगा, वैसे-वैसे उसकी चिंता भी। मां-बाप की याद सताने लगी। मेरे दुष्कर्म के कारण वे बहुत नाराज होंगे। पर हम जा कर क्षमा मांगेंगे तो वे क्षमा कर ही देंगे। परंतु पति साथ चलने के लिए तैयार न था। उसकी अनुपस्थिति में गर्भ की बढ़ी हुई अवस्था में वह दुखियारी युवती अकेली ही श्रावस्ती की ओर निकल पड़ी। जैसे ही पति को सूचना मिली, वह भी पीछे-पीछे दौड़ा आया। राह चलती हुई को गर्भोत्थान हुआ और वहीं वन में पुत्र का जन्म हुआ। पति के बहुत आग्रह करने पर वह उसके साथ अपने घर लौट आयी।

इसी दीन अवस्था में दो वर्ष और बीते। उसे फिर गर्भ रहा। फिर मां-बाप याद आने लगे। बच्चे को गोद में लेकर गर्भ की बढ़ी हुई अवस्था में श्रावस्ती की ओर पुनः अकेली चल पड़ी। पति पीछे-पीछे दौड़ा हुआ आया और उसी प्रकार फिर निर्जन वन में गर्भोत्थान हुआ। प्रसव का समय आया। दुर्भाग्य से उसी समय घनघोर वर्षा होने लगी। प्रसव-पीड़ा बढ़ती जा रही थी। पति ने सोचा, क्यों न कहीं से कुछ लकड़ियां काट लाऊं और सूखे पत्ते बटोर कर इसके आश्रय के लिए एक पर्णकुटी बना दूं। उस काल अँधेरी रात में वह निकल पड़ा। परंतु रातभर लौटा नहीं। पत्नी अकेली कराहती रही। ऐसी विकट स्थिति में फिर एक नन्हें से बच्चे को जन्म दिया। सुबह तक भी पति नहीं लौटा तो उसे ढूंढ़ने निकली। कुछ ही दूर गयी कि देखा उसके पति के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। उसे किसी विषधर सर्प ने डंस लिया था। क्या करती? रोती, बिलखती, दोनों बच्चों को छाती से चिपकाए अकेली श्रावस्ती की ओर चल पड़ी।

राह में छोटी-सी नदिया बहुत विशालकाय हो गयी थी। दो बच्चों को साथ लेकर नदी कैसे पार करे? अतः एक युक्ति लगायी। बड़े बच्चे को नदी के इसी तट पर छोड़ा और नवजात शिशु को

लेकर नदी पार कर गयी। परले पार पहुँच कर नन्हें बच्चे को एक झाड़ी के नीचे लिटाया और बड़े को ले आने के लिए फिर नदी पार करने लगी। पर आंखें नवजात शिशु पर लगी थीं। बीच मँझधार में पहुँची तो देखा कि शिशु को मांस का लोथड़ा समझ कर एक बहुत बड़ा गिद्ध उस पर झपट रहा है। गिद्ध को उड़ाने के लिए वह जोर-जोर से 'शू-शू' की आवाज करने लगी और अपने दोनों हाथ हिलाने लगी। लेकिन गिद्ध नवजात शिशु को अपने पंजों में दबोच कर उड़ गया। इस पार बैठे बच्चे ने जब मां की आवाज सुनी और उसे हाथ हिलाते देखा तब समझा कि वह मुझे बुला रही है। वह नदी में कूद पड़ा और तेज बहाव में बह गया।

अभागिन नारी रोती, बिलखती अकेली श्रावस्ती की ओर चल पड़ी। श्रावस्ती पहुँचने के पहले जब श्मशान घाट के पास से गुजरी तब देखा वहां चिता पर मुर्दे जलाए जा रहे हैं। पता चला कि पिछली रात तेज आंधी-तूफान-मेह के कारण पिता का सात मंजिला महल ढह गया। इसमें उसका पिता, माता और भाई तीनों दब कर मर गये। अब संसार में उसका कोई नहीं रहा। दुखियारी, वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी।

कुछ देर बाद उठी तो खोया हुआ होश वापस नहीं आया। पूर्णतया विक्षिप्त हो गयी। एक-एक करके शरीर पर के सारे कपड़े गिरा दिये। पूर्ण नग्न अवस्था में श्रावस्ती की सड़कों और गलियों में बिलखती फिरने लगी।

ऐसी विपन्नावस्था में अपने पूर्व पुण्य के कारण एक दिन जेतवन विहार के पास से गुजरी। वहां भगवान लोगों को धर्म समझा रहे थे। लोगों ने उसे आते देखा तो दूर भगाना चाहा। परंतु भगवान की नजर उस दुखियारी पर पड़ी तो लोगों को रोका। दुखियारी भगवान के समीप आयी। भगवान ने करुणाभरे शब्दों में कहा, "मेरी दुखियारी बेटी! होश सँभाल!" वाणी में अमृत भरा था। सुनते ही उस दुखियारी को जरा-सा होश आया। उसका ध्यान अपने सर्वथा नग्न शरीर पर गया तो लाज के मारे सिकुड़ गयी। वहीं उकडूं बैठ गयी। समीप खड़े किसी भाई ने उस पर अपनी चादर डाली। उसने तुरंत चादर ओढ़ ली। तब से उस चादर ओढ़ी हुई दुखियारी का नाम 'पटाचारा' पड़ गया।

– "भंते भगवान! मैं बहुत दुखियारी हूं, मुझे शरण दीजिए।"

भगवान ने आश्वासन दिया – "बेटी, होश में आ। धर्म धारण कर। धर्म तुझे सही शरण देगा।"

भगवान की वाणी से अमृत बरसा। सुनते-सुनते चित्त एकाग्र हुआ। थोड़ी देर के लिए स्वमुखी हुआ। भीतर विपश्यना चल पड़ी। पूर्व पारमिताओं के कारण वहीं बैठे-बैठे वह स्रोतापन्न हुई। भगवान ने उसे प्रव्रजित करवाया। मुक्ति के मार्ग पर वह दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ी।

एक दिन लोटे भर जल से अपने पांव धोये। बहता हुआ जल कुछ ही दूर जा कर सूख गया। पांव पर एक लोटा पानी और डाला। जलधारा कुछ और दूर जा कर सूख गयी। तीसरी बार फिर पानी डाला तो जलधारा कुछ और दूर जा कर सूख गयी।

इस छोटी-सी घटना ने भीतर के ज्ञानतंतुओं को झकझोर दिया। जैसी जलधारा वैसी ही जीवनधारा। इस संसार में किसी की जीवनधारा कम उम्र में, किसी की मँझली उम्र में और किसी की बढ़ी उम्र में सूख जाती है। पर मरते सब हैं। यों मरणानुस्मृति के आधार पर विपश्यना करने बैठी तो शीघ्र ही स्रोतापन्न से सकदागामी, अनागामी और अरहंत अवस्था तक जा पहुँची। मनुष्य-जीवन सफल हुआ; सार्थक हुआ; सर्वथा दुःखमुक्त हुआ।

उसने अपना शेष जीवन दुखियारी नारियों को धर्म के मार्ग पर आरूढ़ कर दुःख-मुक्त कराने में बिताया। पटाचारा विपश्यना को और विपश्यना पटाचारा जैसी साध्वी को पा कर धन्य हुई। भगवान ने पटाचारा को विनयधारियों में 'अग्र' की उपाधि दी।

किसा गोतमी

श्रावस्ती नगरी में समाज के अत्यंत निर्धन कुल में जन्मी एक युवती। नाम गोतमी। परंतु अत्यंत दुबली-पतली, यानी कृशकाय, होने के कारण किस्सा अथवा किसा गोतमी कहलाने लगी। वह किसी संयोग से वहीं के एक धनवान कुल में विवाहित हुई। परंतु उसे धनी कुटुंब का कोई सुख नहीं मिल पाया। निर्धन घर से आयी थी इसलिए उसे ताने सुनने पड़ते थे। परिवार में अपमानित होती रहती थी। संतान न होने के कारण भी बहुत जली-कटी सुननी पड़ती थी।

चंद वर्षों के बाद उसका भाग्य पलटा। वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्रवती होने पर निरादर-तिरस्कार बंद हुआ। आदर-सत्कार मिलने लगा। परंतु यह सुख भी बहुत दिनों तक नहीं रहा। दो-तीन वर्ष बीतते-बीतते बालक का देहांत हो गया। पुत्र-वियोग किसा के लिए असह्य हो गया। जब लोग बच्चे की लाश श्मशान ले जाने के लिए उद्यत हुए, तब उसने मृत बच्चे की लाश अपनी छाती से चिपका ली। रो-रो कर लोगों से प्रार्थना करने लगी कि किसी अच्छे वैद्य को बुलाइये, जो इसे जीवित कर दे। उसकी यह पागलों जैसी अवस्था देख कर लोग दुःखी हुए। परंतु क्या करते? मृत को जीवित करने की कोई दवा नहीं होती। टूटी की कोई बूटी नहीं होती। आखिरकार एक दयालु व्यक्ति ने उसे सलाह दी कि भगवान बुद्ध महाभिषक हैं, महावैद्य हैं। इस समय जेतवन में विराज रहे हैं। उनके पास जा। वे शायद कोई औषधि दे दें।

वह बच्चे को छाती से चिपकाए शीघ्रतापूर्वक जेतवन विहार पहुँची। भगवान धर्मासन पर बैठे साधकों को धर्मोपदेश दे रहे थे। वह रोती-बिलखती हुई उनके समीप पहुँची और बच्चे की लाश उनके चरणों के पास रख कर याचना करने लगी – भंते भगवान! इस बच्चे को जीवन प्रदान कीजिए। यही मेरा सहारा है।

भगवान ने कहा, नगर में किसी घर से चुटकीभर सरसों के दाने मांग ला।

किसा गोतमी खुश हुई। भगवान मेरे बच्चे को जीवित कर देंगे। शीघ्रता से सरसों के दाने मांग लाने के लिए चल पड़ी। भगवान ने टोका – देखना, उसी घर से लाना, जिस घर में कभी कोई मरा न हो।

हां, भंते भगवान, ऐसे घर से ही लाऊंगी।

नगर के मोहल्ले-मोहल्ले में, गली-गली में, घर-घर में सरसों के

दाने मांगती। लोग खुश होकर देने के लिए तैयार भी हो जाते। परंतु जब पूछती कि आपके घर में कभी कोई मरा तो नहीं? तब घरवालों के मुँह लटक जाते। एक घर भी ऐसा नहीं मिला जिसमें कोई न मरा हो।

दिन ढलते-ढलते वह थक कर चूर-चूर हो गयी। तब होश जागा कि मरना तो प्राणीमात्र का धर्म है, स्वभाव है। इससे कोई नहीं बच सकता। इस सच्चाई को समझाने के लिए ही भगवान ने मुझे यह काम सौंपा। यों होश आने पर बच्चे की लाश को श्मशान के हवाले कर, भगवान के पास लौट आयी।

अब उसके चित्त की उद्विग्नता दूर हुई देख कर भगवान ने उसे धर्मोपदेश दिया। पूर्वजन्मों की विपुल पारमी संचित होने के कारण विपश्यना करती हुई वह स्रोतापन्न हुई। भिक्षुणीसंघ में प्रव्रजित होकर, विपश्यना का गंभीरतापूर्वक अभ्यास करती हुई, उसने सकदागामी, अनागामी और अंततः अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली।

उसने अनेक दुखियारी महिलाओं को विपश्यना धर्म का प्रशिक्षण देकर दुःखमुक्त किया। भगवान ने उसे मोटे (रूक्ष) चीवर धारण करने वालियों में 'अग्र' की उपाधि दी।

आवश्यक सूचना

इंटरनेट द्वारा बैंकिंग सुविधा में अभूतपूर्व सुधार के कारण यह सूचित करते हर्ष हो रहा है कि सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट (विपश्यना इंटरनेशनल एकेडमी) तथा विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट को दान देने के लिए अब हमारे निम्नांकित खातों में "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया" की भारत की किसी भी शाखा द्वारा पैसे जमा करवा सकते हैं।

पैसे जमा करने के साथ कृपया विवरण सहित इसकी सूचना धम्मगिरि के अकाउंट विभाग को पत्र, फोन, फैक्स अथवा ई-मेल से अवश्य भेजें ताकि वे आप का पैसा बैंक में जमा होने की जांच करके, उसकी रसीद आपको भिजवा सकें। पैसे भरने के बारे में अधिक जानकारी स्थानीय बैंक से मालूम कर सकते हैं।

कोर बैंकिंग सिस्टम –

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के हमारे इगतपुरी के खाते के नं. हैं –

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट – खाता क्र.- ११५४२१६०३४२

विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट – खाता क्र.- ११५४२१६५६४६

इगतपुरी शाखा का कोड नं. – ०३८६ है।

विदेश के साधक **"स्विफ्ट"** ट्रांसफर के द्वारा अपने पैसे जमा करा सकते हैं। विवरण इस प्रकार हैं –

SWIFT Transfer details of respective Trusts are as follow:

1. Sayagyi U Ba Khin Memorial trust
(Vipassana International Academy):

SBININ BB 528 Branch Code 01247 beneficiary Sayagyi U Ba Khin Memorial Trust A\c No. 11542160342 AT Igatpuri branch code: 0386.

2. **Vipassana Research Institute (VRI)**

SBININ BB 528 branch code 01247 beneficiary Vipassana Research Institute A\c No. 11542165646 at Igatpuri branch code: 0386.

संपर्क :

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट, धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३, जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत. फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६ फैक्स : (०२५५३) २४४१७६. Email: info@giri.dhamma.org

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं और मुंबई विश्वविद्यालय के माध्यम से परीक्षाओं का भी आयोजन होता है। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थान पर आयोजित इस कार्यशाला का लाभ ले सकते हैं।

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाः १-११ से ९-११, २००८ (११ बजे तक).

संपर्कः श्री उपेंद्र पटेल, १८, श्रद्धा काम्प्लेक्स, दूसरी मंजिल, म्युनिसिपल कार्यालय के सामने, मेहसाना-३८४००१, फोनः **(०२७६२)** २५४६३४, २५३३१५. मोबा. ०९३७६३-५३३१५

Email: upendrakpatel@rediffmail.com

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००८-२००९ के लिए विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका चौथा सत्र है। यह सत्र **२३ नवंबर २००८** (सुबह) से **२० दिसंबर २००८** (सुबह) तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका तृतीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२१ दिसंबर २००८ (सुबह) से १७ जनवरी २००९ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं- ➲ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है तथा जिनके पास बाकी योग्यताएं हैं, उनके आवेदन पत्र पर भी विचार किया जायगा। ➲ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु भी क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता- ➲ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

इन दोनों पाठ्यक्रमों के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1. Mrs. Ladachat Saingam, *Thailand, To serve Dhamma S²manta, Thailand*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री मुरारी शर्मा, *हरियाणा,* धम्मकारुणिक, करनाल के अतिरिक्त **धम्मसलिल,** देहरादून की सेवा में केंद्र-आचार्य की सहायता

२. श्री दीपक पगारे, *मनमाड* धम्ममनमोद, मनमाड के अतिरिक्त **धम्मसाकेत,** उल्हासनगर की सेवा

3. Mr. Martin Haig, *Australia, To assist the area teacher in serving Dhamma ¾loka, Australia*

नये उत्तरदायित्त्व

आचार्य

Dr. Amnat Apichatvallop, *Thailand, Spread of Dhamma*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री सुनील एवं विद्या बागडे, *नागपुर,* ३. सुनीता पोंक्षे, *नागपुर*

4. Mrs. Yenta Trainate, *Thailand, To assist the area teachers in serving Dhamma Dh±n², Thailand*

5. Mr. James O'Donovan, *South Africa*

6. Mr. Ole Bosch, *South Africa*

सहायक आचार्य

१. श्री मोतीलाल खनाल, *नेपाल*

२. श्री बाबूराजा महर्जन, *नेपाल*

3. & 4. Mr. Daniel & Mrs. Patricia Matthias, *Australia*

5. & 6. Mr. Mirko Amon & Mrs. Alexandra Burguera, *Venezuela*

7. Mr. (Guy) Bruce Cummings, *USA,*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्री हर्षनाथ अड्डिगा, *सिकंदराबाद*

२. श्रीमती राज्यलक्ष्मी देवराशेट्टी, *आंध्रप्रदेश*

३. श्री एन. रामलिंगा रेड्डी, *आंध्रप्रदेश*

४. श्रीमती भूमिबा जैन, *गुड़गांव*

५. कु. ममता धीमान, *फरीदाबाद*

६. श्रीमती अंजु सागर, *नई दिल्ली*

७. कु. अमिता आनंद, *भोपाल*

८. श्री विजय शेजाले, *इंदौर*

९. कु. वंदना पटेल, *कच्छ*

१०. कु. रुद्रा ठाकुर, *कच्छ*

११. श्रीमती जागृति पाटिल, *नाशिक*

१२. श्रीमती पुष्पा उप्पल, धर्मशाला,

13. Mr. Naginchandra Jagada, *USA*

14. Ms. Linda Dunne, *Australia*

15. Ms. Andrea Wass, *Australia*

16. Mr. John Stevenson, *Australia*

17. & 18. Mr. John Hanna & Mrs. Kimie Shinohara, *Australia*

दोहे धर्म के

दुराचार में रत रहे, गृही धर्म से दूर।
मन आकुल व्याकुल रहे, भरे दुःख भरपूर॥

सोये जननी जठर में, जाने कितनी बार।
जरा व्याधि का मरण का, लिए दुखों का भार॥

जग में होता ही रहे, अप्रिय से संयोग।
कौन भला जिसका कभी, प्रिय से हो न वियोग॥

हाय पुत्र! हा संपदा! हाय! मान सम्मान।
हाय! हाय! करते हुए, निकले तन से प्राण॥

अनचाही होती रहे, यही जगत की रीत।
चित विचलित करती रहे, मनचाही की प्रीत॥

जनम जनम करते रहे, संचित दुख समुदाय।
अहोभाग्य! जो अब मिला, दुःख-निरोध उपाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

इण स्यूं बचिये जोगड़ा, त्रिस्णा कंचन काम।
आं री संगत रो हुवै, बड़ो बुरो अंजाम॥

अपणै खोटै करम रा, आया दुख अर क्लेस।
धरम काटसी करम नै, धरम काटसी क्लेस॥

सुखद सांति संतोस रो, ओ ही उचित उपाय।
पर-दुख मँह करुणा जगै, पर-सुख मन हरखाय॥

सज्जन री संगत मिलै, मिलै पंथ अणमोल।
मिनख जमारो सुधरज्या, सुफळ हुवै या खोळ॥

जीवन जीणै री कळा, सुद्ध धरम संजोग।
म्रित्यु मरणै री कळा, विपस्सना रै जोग॥

जनम मरण रै रोग री, ओसध मिली अमोल।
धन्य बुद्ध जी जगत नै, इमरत दीन्यो घोळ॥

एक साधक

की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **श्रावण पूर्णिमा,** 16 **अगस्त,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org